Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

झारखंड लोक सेवा आयोग (JPSC)

भारत का भूगोल

(झारखंड के विशेष संदर्भ सहित)

भाग–2

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: JHPM13

JPSC DLP

विषय सूची (Contents)

7.	**खनिज एवं ऊर्जा संसाधन**	**5–46**
7.1	खनिज संसाधन	5
7.2	ऊर्जा के स्रोत	16
7.3	ऊर्जा संसाधन	19
7.4	ऊर्जा सरंक्षण/दक्षता से संबंधित प्रमुख योजनाएँ	31
7.5	झारखंड: खनिज एवं ऊर्जा संसाधन	41
8.	**उद्योग**	**47–83**
8.1	भारत में औद्योगिक विकास	47
8.2	खनिज आधारित उद्योग	50
8.3	वन आधारित उद्योग	54
8.4	पर्यटन उद्योग	57
8.5	कृषि आधारित उद्योग	59
8.6	अन्य उद्योग	64
8.7	भारत के औद्योगिक प्रदेश	68
8.8	वेबर का औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत	71
8.9	झारखंड में औद्योगिक विकास	76
8.10	झारखंड में नगरीय विकास	77
9.	**भारत में परिवहन**	**84–106**
9.1	सड़क परिवहन	84
9.2	रेल परिवहन	90
9.3	वायु परिवहन	94
9.4	जल-मार्ग परिवहन	96
9.5	प्रमुख बंदरगाह	97
9.6	झारखंड में परिवहन	99
10.	**संचार और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार**	**107–122**
10.1	डाक एवं संचार	108
10.2	व्यापार संतुलन	113
11.	**जनांकिकीय व्यवस्था एवं नगरीकरण**	**123–174**
11.1	भारत की जनांकिकीय व्यवस्था की विशेषताएँ	123

11.2 बढ़ती जनसंख्या को रोकने हेतु सरकारी नीति 125
11.3 भारत की जनगणना, 2011 127
11.4 भारत में नगरीकरण 137
11.5 मानव प्रवास 146
11.6 विश्व की शरणार्थी समस्या 148
11.7 जनसंख्या से संबंधित शब्दावलियाँ 150
11.8 जनसंख्या–पर्यावरण अंतर्संबंध एवं संधृत विकास 153
11.9 झारखंड में जनसंख्या वृद्धि, वितरण और घनत्व 155

12. भारतीय राज्य एवं उनकी स्थलीय सीमाएँ 175–202
12.1 भौगोलिक अवस्थिति 175
12.2 भारतीय राज्य एवं उनकी स्थलीय सीमाएँ 181
12.3 केंद्रशासित प्रदेश 196

13. भारत की भाषाएँ, प्रजातियाँ एवं जनजातियाँ 203–210

14. मानव अधिवास 211–223
14.1 बस्तियों के प्रकार 211
14.2 ग्रामीण बस्ती या अधिवास 211
14.3 नगरीय बस्ती या अधिवास 215
14.4 भारत में मानव बस्तियों की समस्याएँ 219
14.5 झारखंड में नगरीय बस्तियों का प्रतिरूप 220

अध्याय
7

खनिज एवं ऊर्जा संसाधन
(Mineral and Energy Resources)

भारत प्राकृतिक विविधताओं से भरा राष्ट्र है। किसी भी देश के प्राकृतिक संसाधन राष्ट्र की उन्नति का सूचक होते हैं, हम प्रकृति से मानवीय उपयोग के लिये कई चीजें प्राप्त करते हैं, जिसमें खनिज एवं ऊर्जा संसाधनों का सर्वाधिक महत्त्व है।

7.1 खनिज संसाधन *(Mineral Resources)*

भूगर्भ से खनन कर निकाले जाने वाले भौतिक पदार्थों को खनिज कहा जाता है। खनिज वे प्राकृतिक रासायनिक तत्त्व या यौगिक हैं, जिनका निर्माण अजैव क्रियाओं द्वारा होता है। जिन स्थानों से खनिज निकाले जाते हैं, उन्हें खान कहा जाता है। संरचना के आधार पर खनिजों को निम्नलिखित प्रकार से बाँटा जाता है–

खनिज		
धात्विक		अधात्विक
लौह	अलौह	
लौह अयस्क	तांबा	हीरा
मैंगनीज़	एल्युमीनियम	संगमरमर
क्रोमियम	टिन	चूना पत्थर
निकिल	सीसा	ग्रेनाइट
कोबाल्ट	चांदी	अभ्रक
टंगस्टन	प्लेटिनम	जिप्सम
	ज़िंक	गंधक
		पाइराइट
		एस्बेस्टस

धात्विक खनिज (Metallic Minerals)

- ऐसे खनिज जिन्हें गलाने से धातु प्राप्त होती है, धात्विक खनिज कहलाते हैं।
- ये खनिज अयस्क के रूप में प्राप्त होते हैं।
- धातु लचीली होती है और उसे पीटकर किसी भी रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।

लौह खनिज : इसके अंतर्गत **लौह अयस्क, मैंगनीज़, टंगस्टन, क्रोमियम, निकिल, बोरॉन, टाइटेनियम, वेनेडियम, मोलिब्डेनम, कोबाल्ट** आदि को शामिल किया जाता है।

अलौह खनिज : इसके अंतर्गत **तांबा, जस्ता, सीसा, प्लेटिनम, मैग्नीशियम, टिन, बॉक्साइट** इत्यादि को शामिल किया जाता है।

भारत के प्रमुख धात्विक खनिज *(Major Metallic Minerals of India)*

लौह अयस्क (Iron Ore)

- भारत का लौह अयस्क के उत्पादन की दृष्टि से विश्व में चौथा स्थान है।
- भारत में लौह अयस्क मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय भारत की धारवाड़ संरचना में पाया जाता है।
- विश्व के कुल लौह अयस्क का लगभग 3% भारत में निकाला जाता है, मांग कम होने के कारण कुल उत्पादन का लगभग 50% से भी अधिक निर्यात कर दिया जाता है।
- गोवा में उत्पादित होने वाला संपूर्ण लौह अयस्क निर्यात कर दिया जाता है।

लौह अयस्क भंडार के शीर्ष राज्य	लौह अयस्क उत्पादक शीर्ष राज्य
कर्नाटक	ओडिशा
ओडिशा	छत्तीसगढ़
झारखंड	कर्नाटक

लौह अयस्क की प्रमुख पेटियाँ
झारखंड-ओडिशा पेटी
मध्य प्रदेश-महाराष्ट्र पेटी
कर्नाटक-आंध्र प्रदेश पेटी
गोवा-पश्चिमी महाराष्ट्र पेटी

लौह अयस्क के प्रकार

- मैग्नेटाइट (Fe_3O_4)
- हेमेटाइट (Fe_2O_3)
- लिमोनाइट $FeO(OH).nH_2O$
- सिडेराइट ($FeCO_3$)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- जिस खनिज से धातु प्राप्त होती है उसे धात्विक खनिज कहा जाता है। प्रमुख धात्विक खनिज हैं- लौह अयस्क, मैंगनीज, टंगस्टन, निकिल, बोरॉन टाइटेनियम, कोबाल्ट इत्यादि।
- भारत में सबसे पुराना तेल का भंडार डिगबोई, असम में है।
- कर्नाटक, ओडिशा, झारखंड एवं मध्य प्रदेश इत्यादि राज्यों में लौह अयस्क भंडार बड़े पैमाने पर मौजूद हैं।
- कोयला, तेल, गैस, जल-विद्युत, यूरेनियम इत्यादि ऊर्जा के वाणिज्यिक स्रोतों में विशुद्धतः शामिल होते हैं।
- 1994 में भारत में प्रति व्यक्ति ऊर्जा की खपत 243 किग्रा तेल के बराबर थी।
- 1970-1980 के दौरान भारत में पहली बार तेल/ऊर्जा संकट हुआ था।
- झारखंड का मूरी अलुमिना प्लांट हेतु जाना जाता है।
- जिस खनिज में धातु के अंश नहीं पाए जाते हैं उसे अधात्विक खनिज कहा जाता है, जैसे– जिप्सम, अभ्रक, चूना पत्थर, डोलोमाइट, पाइराइट्स, ग्रेफाइट, नमक, जिरकॉन, हीरा, एस्बेस्टस इत्यादि।
- मैग्नेटाइट लौह अयस्क में धातु का अंश लगभग 72% होता है। यह सर्वोत्तम लौह अयस्क होता है।
- भारत में लगभग 97% मैंगनीज़ महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, ओडिशा, कर्नाटक एवं आंध्र प्रदेश में पाई जाती है।
- कर्नाटक के कोलार एवं हट्टी क्षेत्र में भारत का लगभग 99% स्वर्ण उत्पादन होता है।
- भारत में यूरेनियम का उत्पादन झारखंड के जादुगोड़ा में होता है।
- थोरियम मोनाजाइट अयस्क से प्राप्त होता है। इसका विश्व में सर्वाधिक भंडार एवं उत्पादन केरल में है।
- एंथ्रेसाइट कोयला सर्वोत्तम कोटि का कोयला होता है। इसमें कार्बन की मात्रा लगभग 80 से 90% होती है।
- भारत में गोंडवाना कोयला क्षेत्र से ही 99% कोयला प्राप्त होता है।
- पेट्रोलियम/खनिज तेल की दिशा में आत्मनिर्भरता के लिये कृष्ण क्रांति की शुरुआत की गई।
- भारत में जलविद्युत शक्ति गृह सर्वप्रथम वर्ष 1897 में दार्जिलिंग (प. बंगाल) में स्थापित किया गया था।
- प्रमुख जीवाश्म ईंधन हैं– कोयला, प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम इत्यादि।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित खनिजों में से भारत किस खनिज का विश्व का सर्वाधिक भंडारक है? **6th JPSC (Pre)**
   (a) लौह अयस्क (b) कोयला
   (c) कायनाइट (d) मैंगनीज
2. भारत के किस राज्य में विश्व का सबसे बड़ा थोरियम का भंडार है? **4th JPSC (Pre)**
   (a) केरल (b) कर्नाटक
   (c) आंध्र प्रदेश (d) असम
3. निम्नलिखित में से कौन धातु-खनिज नहीं हैं? **4th JPSC (Pre)**
   (a) हेमेटाइट (b) बॉक्साइट
   (c) जिप्सम (d) लिमोनाइट
4. 9 नवंबर, 1967 को हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड की स्थापना कहाँ की गई? **3rd JPSC (Pre)**
   (a) राँची (b) बोकारो
   (c) घाटशिला (d) भिलाई
5. निम्न खनिजों में से किस खनिज के उत्पादन में भारत विश्व में अग्रणी है?
   (a) चादरी अभ्रक (b) तांबा
   (c) जिप्सम (d) लौह अयस्क
6. कैमूर पठार किसके लिये प्रसिद्ध है?
   (a) तांबा (b) चूना पत्थर
   (c) लीथियम (d) बॉक्साइट

7. राजस्थान राज्य का खेत्री किसके लिये प्रसिद्ध है?
   (a) तांबा खनन (b) सोना खनन
   (c) अभ्रक खनन (d) लौह अयस्क खनन
8. भारत के कुल विद्युत उत्पादन में जल-विद्युत का योगदान कितना है?
   (a) 10 प्रतिशत (b) 12 प्रतिशत
   (c) 20 प्रतिशत (d) 22 प्रतिशत
9. निम्नलिखित लौह अयस्कों में से बैलाडिला में किसका खनन होता है?
   (a) हेमेटाइट (b) सिडेराइट
   (c) लिमोनाइट (d) मैग्नेटाइट
10. भारत में सबसे पुराना तेल का भंडार कहाँ है?
   (a) बॉम्बे हाई, महाराष्ट्र (b) अंकलेश्वर, गुजरात
   (c) नवगाँव, गुजरात (d) डिगबोई, असम

उत्तरमाला

1. (c) 2. (c) 3. (c) 4. (c) 5. (a) 6. (b) 7. (a) 8. (d) 9. (a) 10. (d)

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. झारखण्ड में प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद औद्योगिक विकास की गति धीमी क्यों है? विवेचना कीजिये। **4th JPSC (Mains)**
2. भारत में कोयला संरक्षण पर टिप्पणी लिखिये। **3rd JPSC (Mains)**
3. झारखण्ड में कोयला संसाधनों का वर्णन कीजिये। **2nd JPSC (Mains)**
4. भारतीय वातावरण को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक क्या है? समझाइये। अथवा खनिज साधनों को आप कैसे वर्गीकृत करेंगें? कारखानों के स्थान निर्धारण के क्या कारण है? **1st JPSC (Mains)**

अध्याय
8

उद्योग
(Industry)

किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिये औद्योगिक विकास अति आवश्यक है। कच्चे माल को निर्मित वस्तुओं में परिवर्तित करने की क्रिया को विनिर्माण उद्योग कहा जाता है। प्राचीन काल से ही भारत अपने कुटीर उद्योग, शिल्प तथा वाणिज्य उद्योग के लिये विश्व प्रसिद्ध रहा है। भारतीय मलमल, सूती एवं रेशमी वस्त्र, कलात्मक वस्तुएँ आदि की विश्व में काफी मांग थी, किंतु औद्योगिक क्रांति के पश्चात् भारतीय परंपरागत उद्योगों को काफी हानि हुई। औपनिवेशिक शासन की विनिर्मित सामान को आयात करने तथा कच्चे माल को निर्यात करने की प्रोत्साहन नीति ने भारत के परंपरागत उद्योगों की रीढ़ तोड़ दी। यह महसूस किया गया कि औद्योगिक विकास ही एक ऐसा माध्यम है जो हमें आर्थिक उन्नति के पथ पर अग्रसर होने में सहायता कर सकता है। परिणामस्वरूप योजनाबद्ध कार्यक्रम आरंभ किया गया और पंचवर्षीय योजनाओं में उद्योगों के विकास पर ज़्यादा ध्यान दिया जाने लगा।

एक विशाल क्षेत्र में विभिन्न उद्योगों के संकेंद्रण से विकसित औद्योगिक भू-दृश्य को औद्योगिक प्रदेश कहा जाता है। इसमें कोई आधारभूत उद्योग नहीं होता है। अधिकांशत: उद्योग स्वतंत्र अस्तित्व के होते हैं। इसमें औद्योगिक श्रमिकों के निवास के लिये कॉलोनियों और औद्योगिक सामानों के लिये कई छोटे-बड़े कस्बों का उद्भव होता है। इस क्षेत्र में आनुषंगिक इकाइयों की स्थापना से औद्योगिक संकुल का निर्माण होता है।

8.1 भारत में औद्योगिक विकास *(Industrial Development in India)*

भारत में औद्योगिक विकास के कालखंड को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

(i) स्वतंत्रता पूर्व भारत में औद्योगिक विकास

(ii) स्वतंत्रता पश्चात् भारत में औद्योगिक विकास

स्वतंत्रता पूर्व भारत में औद्योगिक विकास

प्राचीन काल से ही भारत अपने सूती वस्त्रों, रेशमी वस्त्रों, मलमल तथा अन्य कलात्मक वस्तुओं के लिये विश्व प्रसिद्ध था, लेकिन इसके बाद वर्ष 1854 में प्रथम सफल प्रयास के रूप में **कावसजी नानाभाई डाबर** द्वारा मुंबई (तत्कालीन बॉम्बे) में सूती मिल की स्थापना की गई। सन् 1855 में कोलकाता के पास 'रिशरा' में जूट मिल की स्थापना के साथ ही भारत में आधुनिक उद्योगों का प्रारंभ हुआ।

स्वतंत्रता पश्चात् भारत में औद्योगिक विकास

- स्वतंत्रता के समय भारत का औद्योगिक विकास मुख्य रूप से उपभोक्ता वस्तुओं तक ही सीमित था एवं ज़्यादातर उद्योग घटती मांग, मुद्रास्फीति, पुरानी मशीनों, आधुनिकीकरण की कमी एवं कच्चे माल की कमी की समस्या से ग्रसित थे, फलत: स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् तत्कालीन केंद्रीय उद्योग मंत्री डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा 6 अप्रैल, 1948 को देश की 'प्रथम औद्योगिक नीति' की घोषणा की गई।
- इस नीति के द्वारा सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के रूप में देश के उद्योगों का बँटवारा किया गया तथा एक मिश्रित एवं नियंत्रित अर्थव्यवस्था की नींव रखी गई।
- 30 अप्रैल, 1956 को देश में 'दूसरी औद्योगिक नीति' की घोषणा की गई। इसके तहत उद्योगों को निजी, सार्वजनिक तथा संयुक्त क्षेत्रों में विभाजित किया गया तथा अवशिष्ट उद्योगों को निजी उद्यम के लिये खुला छोड़ दिया गया।

अध्याय
9

भारत में परिवहन (Transport in India)

किसी देश की सतत् आर्थिक संवृद्धि में बेहतर ढंग से संबद्ध परिवहन प्रणाली अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत के निरंतर विकास में सुचारु परिवहन प्रणाली का महत्त्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान में भारत की परिवहन प्रणाली में यातायात के विभिन्न माध्यमों को शामिल किया गया है, इनमें प्रमुख हैं- सड़क परिवहन, रेल परिवहन, वायु परिवहन, तटीय नौ संचालन इत्यादि। पिछले कुछ वर्षों में परिवहन प्रणाली के क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि के साथ इसकी क्षमता भी बढ़ी है। परिवहन देश की आधारिक संरचना का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है, क्योंकि यह कृषि व औद्योगिक विकास के साथ सामाजिक जीवन पर भी प्रभाव डालता है।

9.1 सड़क परिवहन *(Road Transport)*

देश के आर्थिक विकास के लिये सड़क परिवहन महत्त्वपूर्ण अवसंरचना है। सड़क परिवहन ने भारत के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह विकास की गति, संरचना व पद्धति को प्रभावित करता है।

भारत में 3.3 मिलियन किमी. सड़क नेटवर्क है जो विश्व में दूसरा सबसे बड़ा नेटवर्क है। परिवहन के क्षेत्र में सड़कों का स्थान अग्रणी है क्योंकि वर्तमान अनुमान के अनुसार भारत में सड़क अवसंरचना का उपयोग 65% माल ढुलाई तथा 87% यात्री परिवहन में होता है।

- सड़कों के निर्माण से ग्रामीण विकास की प्रक्रिया तीव्र हुई है। कृषकों का संबंध बाज़ार से बढ़ा है, जिससे उत्पादन आधिक्य की घरेलू बाज़ार से लेकर अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार तक पहुँच सुनिश्चित हुई है। इससे कृषकों में व्यावसायिक प्रवृत्ति का विकास होने के कारण उनकी लाभदेयता बढ़ाने में भी सफलता मिली है।
- भारत में औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने साधनों की गतिशीलता में वृद्धि की है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों के निर्माण से औद्योगिक मांग की वस्तुओं के परिवहन में कुशलता बढ़ी है।
- परिवहन के विकास के कारण लोगों में गतिशीलता बढ़ी है।
- भारत में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास के लिये ज़िम्मेदार होता है।
- भारत में सड़कों के निम्नलिखित प्रकार हैं-

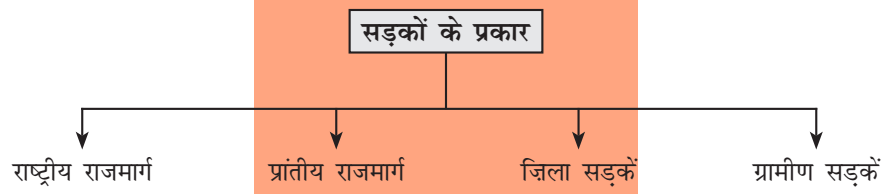

राष्ट्रीय राजमार्ग *(National Highway)*

- भारत में राष्ट्रीय राजमार्गों/एक्सप्रेस मार्ग की कुल लंबाई 132500 किमी. है।
- राष्ट्रीय राजमार्ग, कुल सड़क मार्ग का मात्र 2.06% है। किंतु 40% यातायात इन्हीं राष्ट्रीय राजमार्गों से होकर संपन्न होता है। इनके निर्माण व मरम्मत की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की होती है।
- वर्तमान में राष्ट्रीय राजमार्ग-44 भारत का सबसे लंबा राजमार्ग है, जो श्रीनगर (जम्मू एवं कश्मीर) से प्रारंभ होकर कन्याकुमारी (तमिलनाडु) में समाप्त होता है।

अध्याय
10

संचार और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार (Communication and International Trade)

एक स्थान से दूसरे स्थान तक संदेश या सूचना की पहुँच सुनिश्चित करने की व्यवस्था को 'संचार' कहते हैं। आरंभ में परिवहन के साधन ही संचार के साधन होते थे। डाक, तार, प्रिंटिंग प्रेस, दूरभाष तथा उपग्रहों की खोज ने संचार को आसान एवं तीव्र बना दिया है।

मापदंड एवं गुणवत्ता के आधार पर संचार साधनों को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है-

वैयक्तिक संचार तंत्र
(Personal Communication System)

- यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक संदेश अथवा सूचना पहुँचाने का कार्य करता है। उपर्युक्त सभी वैयक्तिक संचार तंत्रों में इंटरनेट सर्वाधिक प्रभावी एवं आधुनिक तकनीक है।
- यह उपयोगकर्त्ता को ई-मेल के माध्यम से ज्ञान एवं सूचना की दुनिया में सीधे पहुँच बनाने में सहायक होता है।

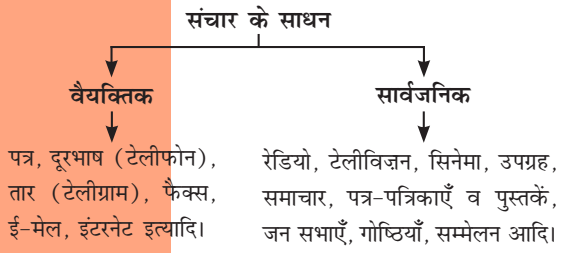

सार्वजनिक संचार तंत्र (Mass Communication System)

इससे जनसाधारण तक संदेश तथा सूचना पहुँचाई जाती है। इसके लिये मुद्रण माध्यम (अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ), इलेक्ट्रॉनिक माध्यम (रेडियो, टेलीविज़न) इत्यादि का उपयोग किया जाता है।

रेडियो (Radio)

- विश्व में सर्वप्रथम 1895 में मार्कोनी द्वारा एक अस्थायी स्टेशन से रेडियो प्रसारण किया गया था।
- भारत में रेडियो का प्रसारण 1920 के दशक में आरंभ हुआ। पहले कार्यक्रम का प्रसारण वर्ष 1923 में 'रेडियो क्लब ऑफ बॉम्बे' द्वारा प्रारंभ किया गया था। तब से इसने असीमित लोकप्रियता पाई है और लोगों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में परिवर्तन भी किया है।
- 23 जुलाई, 1927 को लॉर्ड इरविन द्वारा 'इंडियन ब्रॉडकास्ट कंपनी' (बॉम्बे) का उद्घाटन किया गया। सरकार द्वारा अधिग्रहण के पश्चात् अप्रैल 1930 से उद्योग और श्रम मंत्रालय के अंतर्गत 'इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस' नाम से सेवाएँ जारी रखी गईं।
- 10 सितंबर, 1935 को मैसूर में निजी क्षेत्र का रेडियो स्टेशन 'आकाशवाणी मैसूर' स्थापित किया गया।
- 19 जनवरी, 1936 को पहला समाचार बुलेटिन 'इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस' द्वारा प्रसारित हुआ।
- 8 जून, 1936 को इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस को 'ऑल इंडिया रेडियो' नाम दिया गया।
- 3 अक्टूबर, 1957 को विविध भारती द्वारा प्रसारण सेवाएँ शुरू की गईं।
- ऑल इंडिया रेडियो, सूचना, शिक्षा एवं मनोरंजन से जुड़े विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम प्रसारित करता है।

टेलीविज़न (TV)

- सूचना के प्रसार एवं आम लोगों को शिक्षित करने में टेलीविज़न प्रसारण एक अत्यधिक प्रभावी दृश्य-श्रव्य माध्यम के रूप में उभरा है।
- भारत में पहले टेलीविज़न स्टेशन की शुरुआत 1 नवंबर, 1959 को ऑल इंडिया रेडियो के एक भाग के रूप में हुई।
- 1976 में दूरदर्शन, जो ऑल इंडिया रेडियो का एक अंग था, को अलग कर एक नया विभाग बना दिया गया।

अध्याय
11

जनांकिकीय व्यवस्था एवं नगरीकरण (Demographic System and Urbanization)

जनसंख्या के सांख्यिकीय और व्यवस्थित अध्ययन को 'जनांकिकीय' कहा जाता है। जनगणना से केवल स्थान विशेष में कुल कितने व्यक्ति रहते हैं, उसका पता चलता है, लेकिन जनांकिकीय के अध्ययन के आधार पर विभिन्न लैंगिक वर्गों, भौगोलिक क्षेत्रों तथा अन्य सभी तुलनात्मक क्षेत्रों में जनसंख्या को वर्गीकृत कर सकते हैं। जनांकिकीय व्यवस्था के आधार पर ही जनसंख्या के गुणात्मक स्तर का पता चलता है, साथ ही भविष्य के लिये नीति बनाने में भी मदद मिलती है।

11.1 भारत की जनांकिकीय व्यवस्था की विशेषताएँ *(Characteristics of India's Demographic System)*

भारत की जनांकिकीय व्यवस्था की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- अधिक जनसंख्या
- ग्रामीण जनसंख्या की अधिकता
- उच्च जनसंख्या वृद्धि दर
- निम्न लिंगानुपात
- अधिक निर्भरता की स्थिति
- नृजातीय विविधता
- वृद्धि के परिणाम

अधिक जनसंख्या *(Excess Population)*

- किसी देश की अनुकूलतम जनसंख्या उसे कहा जाता है, जो उसके अधिकतम या संपूर्ण संसाधनों का अधिक-से-अधिक दोहन कर सकने वाली न्यूनतम जनसंख्या हो।
- वैश्विक तुलनात्मक दृष्टि से भारत का क्षेत्रफल लगभग 2.4% है, लेकिन यहाँ पर कई गुना अधिक जनसंख्या है।
- एक अनुमान के अनुसार 2025–50 के बीच भारत की जनसंख्या चीन से भी अधिक हो जाएगी, क्योंकि चीन की जनसंख्या वृद्धि दर 1% है, जबकि भारत की औसत वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर 1.64% है।
- इस स्थिति में भारत की जनसंख्या 34 वर्षों में दोगुनी हो जाएगी, जबकि चीन की जनसंख्या 60 वर्षों में दोगुनी होगी।
- भारत में जनसंख्या अधिक होने के कारणों में मृत्यु-दर की तुलना में जन्म-दर का अधिक होना, कम उम्र में विवाह करने की सामाजिक मान्यता, धार्मिक अंधविश्वास, निरक्षरता की अधिकता, जनसंख्या नियंत्रण के लिये उपयुक्त वैज्ञानिक सुविधाओं का अभाव, पुत्र-प्राप्ति की प्रबल चाह आदि जैसी प्रमुख समस्याएँ हैं।

ग्रामीण जनसंख्या की अधिकता *(Excess of Rural Population)*

- भारत में 2011 की जनगणना के आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों की **आबादी 68.9%** है, जबकि 31.1% जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है।
- नगरीय क्षेत्रों में कम-से-कम तीन-चौथाई लोग द्वितीयक या तृतीयक क्षेत्र पर निर्भर होते हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश लोग प्राथमिक क्षेत्रों पर निर्भर होते हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के पूंजी के अनुपात में लाभ की दर सबसे कम होती है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न रोज़गार सृजन करके विकास किया जा सकता है।

अध्याय
12

भारतीय राज्य एवं उनकी स्थलीय सीमाएँ (Indian State and its Terrestrial Borders)

भारत हिंद महासागर के उत्तरी सिरे पर पूर्वी गोलार्द्ध के मध्य में स्थित एक विशाल देश है। इसकी विशालता के कारण ही इसे उपमहाद्वीप की संज्ञा दी जाती है। आर्यावर्त एवं जंबूद्वीप इसके प्राचीन नाम हैं। ईरानियों ने इसे 'हिंदुस्तान' तथा यूनानियों ने इसे 'इंडिया' कहा।

सम्राट भरत के नाम पर इसका नाम भारतवर्ष पड़ा अंततः भारतीय संविधान के अनुच्छेद-1 में इसे भारत अर्थात् 'इंडिया' के नाम से स्वीकार किया गया है। भारत दक्षिणी एशिया में हिंद महासागर के तटवर्ती देशों में एक केंद्रीय स्थिति रखता है तथा यह विश्व का एकमात्र ऐसा देश है, जिसके नाम पर किसी महासागर का नाम पड़ा है। भारत के भू-राजनीतिक, आर्थिक, व्यापारिक एवं भू-सामरिक क्षेत्र में हिंद महासागर की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

भारत का क्षेत्रफल 32.8 लाख वर्ग किमी. है जो विश्व के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 2.4% है। भारत विभिन्न भौतिक स्वरूपों में बँटा हुआ है जैसे– पर्वत, पठार, मैदान, झीलें इत्यादि, जो भारत के विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए हैं। कर्क रेखा भारत के मध्य से होकर गुज़रती है। भारत के संपूर्ण क्षेत्रफल का 10.7% भू-भाग पर्वतीय, 18.6% भू-भाग पहाड़ी, 27.7% भू-भाग पठारी एवं 43% भू-भाग मैदानी है।

12.1 भौगोलिक अवस्थिति *(Geographical Location)*

- भारत की आकृति लगभग चतुष्कोणीय है। इसका उत्तर-दक्षिण में अधिकतम विस्तार 3,214 किमी. तथा पूर्व-पश्चिम में अधिकतम विस्तार 2,933 किमी. है।
- मुख्य भूमि, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह तथा लक्षद्वीप समूह सहित भारत की तट रेखा की कुल लंबाई लगभग 7,516.6 किमी. है।
- भारत की स्थलीय सीमा की लंबाई 15106.7 किमी. (अन्य स्रोतों में 15,200 किमी.) है।
- भारत पूरी तरह से उत्तर-पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है। यह 6°4' (मुख्य भूमि 8°4' N) उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश के बीच तथा 68°7' पूर्वी देशांतर से 97°25' पूर्वी देशांतर तक विस्तृत है।
- भारत की मुख्य भूमि उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पूर्व में अरुणाचल प्रदेश से लेकर पश्चिम में गुजरात तक फैली हुई है।
- भारत के उत्तर-पश्चिम, उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी सीमा पर नवीनतम मोड़दार पर्वतों का विस्तार पाया जाता है, जबकि दक्षिण में प्रायद्वीपीय क्षेत्र का विस्तार पाया जाता है। भारत का प्रायद्वीपीय भू-भाग उत्तर में अधिक चौड़ा तथा 22° उत्तरी अक्षांश से दक्षिण की ओर सँकरा होता गया है।
- हिमालय पर्वतमाला द्वारा भारतीय प्रायद्वीप की मुख्य भूमि को एशिया से अलग किया जाता है। भारत, पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण में हिंद महासागर से घिरा हुआ है।
- भारत की मुख्य भूमि से दूर अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में स्थित दक्षिणतम बिंदु इंदिरा पॉइंट अथवा पिगमेलियन पॉइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप) तथा भारत का सबसे उत्तरी बिंदु 'इंदिरा कॉल' (जम्मू-कश्मीर) है। भारत का सबसे पूर्वी बिंदु 'किबीथु' (अंजा ज़िला, अरुणाचल प्रदेश) तथा पश्चिमी बिंदु गुहार मोती (कच्छ ज़िला, गुजरात) है।
- वर्तमान में भारत के जम्मू एवं कश्मीर राज्य को अक्टूबर 2019 में जम्मू एवं कश्मीर तथा लद्दाख दो केंद्रशासित प्रदेशों में विभाजित कर दिया गया है। दमन-दीव तथा दादरा और नागर हवेली दो केंद्रशासित प्रदेशों को मिलाकर एक केंद्रशासित प्रदेश का निर्माण कर दिया गया है। इसलिये अब भारत में 28 राज्य एवं 8 केंद्रशासित प्रदेश हो गए हैं। भारत के गृह मंत्रालय द्वारा नया मानचित्र का भी निर्माण किया गया है।

अध्याय
13

भारत की भाषाएँ, प्रजातियाँ एवं जनजातियाँ (Languages, Races and Tribes of India)

भारत में भाषाएँ एवं उनका संघटन *(Languages and their Composition in India)*

भारत एक भाषायी विविधता का क्षेत्र है। देश में 200 भाषाएँ और लगभग 544 बोलियाँ हैं जिसमें 97% जनसंख्या सिर्फ 23 भाषाएँ बोलती हैं। 22 भाषाएँ संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल हैं और अनेक भाषाएँ गैर-अनुसूचित हैं। अनुसूचित भाषाओं में हिंदी बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है। देश में भाषायी प्रदेशों की सीमाएँ सुनिश्चित और स्पष्ट नहीं हैं बल्कि उनका अपने-अपने सीमांत प्रदेशों में क्रमिक विलय और अध्यारोपण हो जाता है।

भाषाओं का भौगोलिक वितरण *(Geographical Distribution of Languages)*

उत्तर के विशाल मैदान में आर्य परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। हिंदी इस क्षेत्र की प्रमुख भाषा है जो देश की बहुसंख्यक जनता द्वारा बोली जाती है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश प्रमुख हिन्दी भाषी क्षेत्र हैं। द्रविड़ परिवार की भाषाएँ मुख्यत: प्रायद्वीपीय भारत में बोली जाती हैं जिसमें कन्नड़ भाषा का संबंध कर्नाटक से, तमिल भाषा का तमिलनाडु से, मलयालम का केरल से और तेलुगु का संबंध आंध्र प्रदेश से है। चीनी-तिब्बती परिवार की भाषाएँ एवं बोलियाँ मुख्यत: उत्तर-पूर्व की जनजातियों तथा उत्तर एवं उत्तर-पश्चिम में स्थित हिमालयी एवं उपहिमालयी प्रदेश के लोगों द्वारा बोली जाती हैं। तिब्बती हिमालय शाखा की बोलियाँ लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम एवं भूटान में बोली जाती हैं। उर्दू भाषा का संकेंद्रण मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार, आंध्र प्रदेश एवं कर्नाटक में है। उड़िया, बंगाली एवं असमिया मुख्यत: पूर्वी भारत में बोली जाती है। असम- म्याँमार शाखा की भाषाएँ एवं बोलियाँ भारत एवं म्याँमार के समीपवर्ती क्षेत्र में बोली जाती हैं। इसमें नागा भाषा नगालैंड में, लुशाई भाषा मिज़ो पहाड़ियों में, मेतेई भाषा मणिपुर में बोली जाती है। कच्छी एवं सिंधी बोलने वाले लोग मुख्यत: पश्चिमी भारत में निवास करते हैं।

भारत की प्रजातियाँ एवं जनजातियाँ *(Races and Tribes of India)*

- सामान्यत: 'प्रजाति' का अर्थ एक ऐसे विशेष मानव वर्ग से है, जिसमें वर्ग विशेष के सभी मनुष्यों की शारीरिक रचना तथा बाह्य लक्षण जैसे-त्वचा का रंग, कद, सिर एवं नाक की बनावट, बालों की प्रकृति, आँखों की बनावट, होंठों की मोटाई तथा रक्त वर्ग आदि एक जैसे हों।
- जनजातीय लोग विभिन्न धार्मिक, भाषायी, नृजातीय समूहों से संबंध रखते हैं। इनकी जीवन शैली एवं व्यवसाय का प्रकृति से सीधा एवं घनिष्ठ संबंध होता है। सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से ये पिछड़े हुए होते हैं।
- सरल शब्दों में कहा जाए तो, जनजाति वह सामाजिक समुदाय है जो राज्य के विकास के पूर्व अस्तित्व में था या जो अब भी राज्य की मुख्यधारा से अलग-थलग है। 'जनजाति' वास्तव में भारत के आदिवासियों के लिये इस्तेमाल होने वाला एक वैधानिक पद है।

भारत की प्रजातियाँ (Races of India)

- भूगोलवेत्ताओं का मानना है कि भारत में आने वाली सबसे पहली प्रजाति नीग्रो (नीग्रिटो) है, इसके बाद क्रमश: प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड एवं भूमध्यसागरीय प्रजातियों का आगमन हुआ तथा सबसे अंत में नार्डिक प्रजाति का आगमन हुआ।
- प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड एवं भूमध्यसागरीय प्रजातियों ने मिलकर हड़प्पा सभ्यता की शुरुआत की। प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर हड़प्पा काल में सामान्यत: 4 प्रकार की प्रजातियों का अस्तित्व था-
  - प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड
  - भूमध्यसागरीय
  - अल्पाइन
  - मंगोलॉयड

अध्याय
14

मानव अधिवास (Human Settlement)

मनुष्य मकानों के समूह में रहता है, जिसे ग्राम, शहर या नगर कह सकते हैं। इसे आम तौर पर बस्ती या अधिवास कहते हैं। बस्ती मानव वास के रूप में परिभाषित की जाती है, जिसकी सीमा एकल आवास से लेकर बड़े शहर तक होती है। मानव बस्ती का अध्ययन मानव भूगोल का आधार है, क्योंकि किसी भी क्षेत्र में बस्तियों का प्रारूप उस क्षेत्र के वातावरण से वहाँ रहने वाले मानव के संबंध को दर्शाता है। इसलिये वह स्थान, जो स्थायी रूप से बसा हुआ है, उसे मानव बस्ती कहते हैं, परंतु कुछ बस्तियाँ अस्थायी हो सकती हैं, जिसमें निवास कुछ ही समय या किसी एक ऋतु के लिये किया जाता है।

वस्तुत: बस्तियों में विभेद नगरीय एवं ग्रामीण रूप में होता है, परंतु इस पर संदेह है कि किसे ग्रामीण कहें एवं किसे नगर? कुछ हद तक जनसंख्या इसका एक मापदंड हो सकती है, परंतु यह सर्वव्यापी नहीं है, क्योंकि विकासशील देश, जैसे- चीन व भारत के कुछ गाँवों में यूरोपीय विकसित देशों के शहरों से अधिक जनसंख्या है। यद्यपि बात की जाए उद्यम की तो एक समय गाँव के लोगों का मुख्य उद्यम कृषि करना था, जबकि वर्तमान समय में विकसित देशों की नगरीय जनसंख्या शहरों में कार्य करते हुए गाँवों में रहना पसंद करती है। अंतत: ग्रामीण तथा नगरीय बस्ती में इस प्रकार विभेद किया जा सकता है कि नगरों या शहरों में निवासियों या लोगों का व्यवसाय द्वितीयक या तृतीयक गतिविधियों से जुड़ा होता है, जबकि ग्रामीण बस्ती में रह रहे निवासियों का व्यवसाय प्राथमिक गतिविधियों से जुड़ा होता है, जैसे- खेती करना, लकड़ी काटना, पशुपालन इत्यादि।

14.1 बस्तियों के प्रकार *(Types of Settlement)*

बस्तियों को उनके प्रतिरूप व आकृति के आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है। आकृति के आधार पर बस्तियों को निम्नलिखित प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

प्रकीर्ण बस्ती: ऐसी बस्तियों में मकान एक-दूसरे से दूर-दूर होते हैं। चूँकि, ये घर खेतों में बने होते हैं, अत: खेत एक घर को दूसरे घर से अलग करता है। कुछ सांस्कृतिक आकृति, जैसे- पूजा स्थल या बाज़ार, बस्तियों को एक साथ बांधती हैं।

संहत बस्ती: ये ऐसी बस्तियाँ होती हैं, जिनमें मकान एक-दूसरे के समीप बनाए जाते हैं। इस प्रकार की बस्तियों का विकास नदी घाटियों के सहारे या उपजाऊ मैदानों में होता है। यहाँ निवास करने वाला समुदाय मिलकर रहता है एवं व्यवसाय भी मिल-जुलकर करता है।

14.2 ग्रामीण बस्ती या अधिवास *(Rural Settlement)*

इस प्रकार की बस्तियाँ प्रत्यक्ष रूप से तथा अधिक निकटता से भूमिगत संबंध रखती हैं। यहाँ निवास करने वाले लोग ज़्यादातर प्राथमिक गतिविधियों में लगे होते हैं, जैसे- कृषि, पशुपालन, मत्स्य पालन इत्यादि व्यवसाय इनके प्रमुख उद्यम हैं। ये बस्तियाँ सामान्यत: आकार में छोटी होती हैं। ग्रामीण बस्तियों को प्रभावित करने वाले कारक इस प्रकार हैं-

भूमि: जहाँ भूमि कृषि योग्य या उपजाऊ होती है, वहाँ की भूमि का मानव निवास करने हेतु चुनाव करता है। दक्षिणी-पूर्वी एशिया में रहने वाले लोग नदी घाटियों के निम्न भाग एवं तटवर्ती मैदानों के समीप बस्तियों का निर्माण करते हैं, जबकि यूरोप के लोग दलदली एवं निचले क्षेत्र में अधिवास नहीं करते। किसी भी क्षेत्र में प्रारंभिक अधिवासी समतल एवं उपजाऊ भूमि पर ही बसते हैं।

उच्च भूमि वाले क्षेत्र: मानव द्वारा ऊँचे स्थान को अधिवास हेतु इसलिये चुना जाता है, क्योंकि ये बाढ़ से प्रभावित नहीं होते तथा बाढ़ के समय होने वाली क्षति से बचा जा सकता है। नदि बेसिन के निम्न क्षेत्र में बस्तियाँ तटबंधों तथा

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी तथा फ्लोचार्ट का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation